मैथिलीशरण गुप्त की नारी दृष्टि

डॉ. इशरत खान

द्विवेदी युग परिवर्तन और सुधार का युग है। जब राजनेता और साहित्यकार समान भावना से देश के हित केलिए काम कर रहे थे तब गुप्त जी ने साहित्य क्षेत्र में प्रवेश किया था। तब की एक ज्वलन्त समस्या थी, नारी अस्तित्व की। गुप्त जी नारियों को सामाजिक शोचनीय स्थिति पर व्याकुल थे। उन्हें सामाजिक बन्धनों में जकड़ा हुआ पाकर उन्होंने पुरुषों के प्रति अपनी खीझ प्रकट की: —

नारीकृत शास्त्रों के सब बन्धन हैं,
नारी को ही लेकर।
अपने लिए सभी सुविधाएँ, पहले ही
कर बैठे नर। [1]

गुप्त जी मध्यकालीन नारी के स्थान पर प्राचीन कालीन नारी को पुनः प्रतिष्ठित करना चाहते थे। उनकी मान्यता यही थी जो पुराने जमाने में भारत के द्वारा स्वीकृत थी :-

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।'

गुप्त जी ने उपेक्षिता नारियों के चरित्र को अपने काव्य का विषय बनाकर नारी समाज के प्रति पूर्ण उदारता दिखाई है। यही कारण है कि उनके काव्य में चित्रित उर्मिला और कैकेयी- (साकेत); यशोधरा (यशोधरा) विधृता-) (द्वापर) (उत्तरा-(जयद्रथवध); (शकुन्तला-(शकुन्तला); (हिडिम्बा-हिडिम्बा); (मीनलदे और रानकदे-(द्रौपदी-जयभारत), कुन्ती- (बक संहार) और विष्णु प्रिया- (विष्णु प्रिया) आदि नारियों के चरित्र में नारी का त्याग, तप, बलिदान, करुणा एवं दैन्य आदि गुणों का समावेश किया है। गुप्त जी की नारी दृष्टि को समझने के लिए साकेत, यशोधरा और विष्णुप्रिया विशेष रूप से पढना चाहिए। इन तीनों काव्यों की नायिका पुरुषों के सन्यास से पीडित नारियां हैं। वे भारत की उन असंख्य नारियों का प्रतिनिधित्व करती हैं जिनके पतियों ने उन्हें इसलिए त्याग दिया कि वे उनके मोक्ष-मार्ग में बाधा न हो जाये। इन तीनों नारियों में से उर्मिला का अपने पति से मिलन होता है। बाकी दोनों नारियां आजीवन विरह को झेलती हैं। इसके पूर्व काव्य में इन तीनों को उपेक्षा की दृष्टि से देखा गया।[2] महान कवि गुप्त जी के हाथों ही इनका उद्धार हुआ।

गुप्त जी ने जितना यशोधरा और विष्णुप्रिया के चरित्र को उभारा उतना वह

1. मैथिलीशरण गुप्त — पंचवटी; साहित्य सदन; झांसी सन् 1965 पृष्ठ. सं. 32.
2. उर्मिला का चरित्र रामायण और तुलसी कृत रामचरित में नहीं उभारा गया।

ऊर्मिला के चरित्र को नहीं उभारा। इसका कारण स्पष्ट है, चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात् उर्मिला का कष्ट एक प्रकार से समाप्त हो जाता है, किन्तु यशोधरा और विष्णुप्रिया की वेदना दिन पर दिन गहरी होती जाती है।

साकेत में, लक्ष्मण के चौदह वर्ष के वनवास जाने के समाचार को सुनकर ऊर्मिला दुःखी हो जाती है और उसकी वाणी मूक हो जाती है। उसे दुख तो इस बात का है, कि जब, सीता राम के साथ वनवास जा सकती है, तो वह लक्ष्मण के साथ वन क्यों नहीं जा सकती ? परन्तु उसके पति सेवा भाव से वन जा रहे हैं, इसको वह भलीभाँति जानती है। तभी उसने अपने जाने का प्रस्ताव लक्ष्मण के सामने नहीं रखा। दूसरा दुःख उसे इस बात का है कि उसके स्वामी ने उसकी उपे... की, उससे पूछने की आवश्यकता भी नहीं समझी और तो उससे सहानुभूति के दो, शब्द भी नहीं बोले। इसी को लेकर उसके अन्तर्मन में एक संघर्ष सा मचा है। अन्ततः यह (सहानुभूति का) कार्य सीता और राम को करना पड़ता है—सीता उर्मिला से कहती है—

'आज भाग्य जो है मेरा,
वह भी हुआ न तेरा। [1]

और इसी भाषा में राम भी उर्मिला एवं लक्ष्मण की पीड़ा का उल्लेख करते हैं :—

'लक्ष्मण तुम तो तपस्पृही,
मैं वन में भी रहा गृही।
वनवासी, है निर्मोही
हुए वस्तुतः तुम दो ही'। [2]

उर्मिला का विरह एक आदर्श भारतीय नारी का विरह है। विरह की अवस्था में भी वह (उर्मिला) यह नहीं चाहती है कि वह स्वयं या उसके पति कर्तव्य पथ से विचलित हो। यदि कभी आवेश में वह कहती—

'भूल अवधि-सुध, प्रिय से,
कहती जगती हुई कभी—आओ।'

तो दूसरे ही क्षण कहती—

'किन्तु कभी सोती तो
उठती वह चौंक बोलकर—'जाओ।'' [3]

यही कारण है कि जब उसका पंचवटी में लक्ष्मण के साथ क्षणिक संयोग होता है तब वह कहती है —

'मेरे उपवन के हरिण, आज वनचारी
मैं बाँध न लूंगी, तुम्हें तजो भय भारी।' [4]

लक्ष्मण का मौन उत्तर था—

'गिर पड़े दौड़ सौमित्र प्रिया-पद-तल में,
वह भींग उठी प्रिय-चरण धरे दृग-
जल में।' [5]

इस प्रकार उर्मिला को अपना खोया हुआ मान सम्मान मिल गया और वह श्रद्धा से पति चरणों में गिर पड़ी।

उर्मिला ने अपने यौवन के चौदह वर्ष विरह में बिताकर और अपने त्याग बलिदान

1. श्री मैथिलीशरण गुप्त, साकेत।
2. श्री मैथिलीशरण गुप्त, साकेत।
3. साकेत — पृ॰ सं॰ 211।
4. साकेत — पृ॰ सं॰ 209।
5. साकेत — पृ॰ सं॰ 209।

से लक्ष्मण के सेवा भाव को बनाये रखा। जो यश, मान लक्ष्मण को मिला, उसका सारा श्रेय उर्मिला को ही जाता है।

गुप्त जी ने साकेत में उर्मिला के माध्यम से नारी समस्या पर सोचना आरम्भ किया। पतियों के वैराग्य से उनका सम्बन्ध क्या है? ऐसी नारियों का आधुनिक दृष्टि से क्या समाधान हो सकता है। साकेत में उर्मिला के माध्यम से नारी जाति के प्रति केवल सहानुभूति ही दिखाई है। साकेत इस प्रक्रिया का प्रथम चरण था, दूसरा चरण था यशोधरा। इस तरह यशोधरा साकेत की अपेक्षा अधिक प्रौढ़ कृति है।

गुप्त जी ने उर्मिला के व्यक्तित्व का विश्लेषण भारतीय आदर्शों के अनुरूप किया है। इसीलिए वह लक्ष्मण की उपेक्षा का प्रतिकार नहीं कर पाती है, केवल प्रारम्भ में संकेत मात्र है। परन्तु यशोधरा में एक जाग-रूक नारी का रूप मिलता है। उसका कहना है कि मोक्ष ही यदि जीवन का मुख्य लक्ष्य है तो नारियाँ ही इससे क्यों वंचित रहें? यह भावना तो उस समय की सभी नारियों में उठती होगी जिनके पति सन्यासी हो गये होंगे।

यशोधरा आगे कहती है कि क्या पति और पत्नी एक साथ रहकर मुक्ति की साधना नहीं कर सकते। आश्चर्य है कि उर्मिला का ध्यान इस सोच की ओर नहीं गया यदि गया भी होगा तो सामाजिक मर्यादा के नाते वह उसको भीतर ही दबाकर रह गई होगी। किन्तु यशोधरा स्वाभिमानी गर्विणी नारी है। जो विपत्ति उसके सामने आ पड़ी है वह उसको साहस के साथ झेलती है और उसके सभी पहलुओं पर गहराई से विचार करती है। यहाँ वह एक चिन्तक और दार्शनिक की भूमिका निभाती है। उसके विचारों को निम्न-लिखित उदाहरणों में देखा जा सकता है।—

'मैं अबला! पर वे तो विश्रुत वीर-
बली थे मेरे,
मैं इन्द्रियासक्ति! पर वे कब थे-
विषयों के चेरे?' [1]

'सिद्धि-मार्ग की बाधा नारी! फिर
उसकी क्या गति है,?
पर उससे पूछूं क्या, जिनको मुझसे
आज विरति है।' [2]

विष्णुप्रिया यशोधरा के बाद की रचना है, इसलिए उसमें भी ऐसे ही बेधड़क और निर्भीक विचार प्रस्तुत किए गये हैं।

यही कारण है कि विनम्र सौम्य विष्णुप्रिया भी (गौरांग पुरुष) के प्रति ऐसे गम्भीर उद्‌गार निकलती है। जैसे-

'अबला के भय से भाग गए,
वे उससे निर्बल निकले,
नारी निकले तो असती है,
नर यति कह कर चल निकले'।

'हाय मेरे कारण ही छोड़ गये घर वे,
गृहिणी ही त्यागते हैं नर, गृह कहके।'

मध्यकाल में यह धारणा प्रबल थी, कि पुरुषों के साथ नारी वैराग्य नहीं ले सकती थी। परन्तु अब आधुनिक काल में यह धारणा

1. मैथिली शरण गुप्त; यशोधरा।

बदल चुकी है। इसीलिए अरविन्द ने कहा है पति पत्नी दोनों मिलकर मुक्ति की साधना कर सकते हैं।

यशोधरा इसलिए दुःखी नहीं कि गौतम उसे त्यागकर चले, अपितु इस बात की है कि वे उसे बताकर क्यों नहीं गये। अगर वह बताकर जाते तो वह उनकी सफलता के मार्ग में कभी बाधा न बनती।

गुप्त जी ने इन विचारों को निम्न पंक्तियों में व्यक्त किया है-

सिद्धि-हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात;
पर चोरी-चोरी गये, यही बड़ा व्याघात
सखि, वे मुझसे कह कर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे अपनी
पथ-बाधा ही पाते।'

'सास-ससुर पूछेंगे
तो उनसे क्या अभी कहूँगी मैं,
हा! गर्विता तुम्हारी
मौन रहूँगी, सहूँगी मैं।'

सास-ससुर के पूछने पर कि गौतम कहाँ है? यशोधरा चुप हो जाती है। इस प्रकार उसको उपेक्षा के साथ अपमान भी सहना पड़ता है।

गुप्त जी ने साकेत, यशोधरा, विष्णुप्रिया में उपेक्षित नारि का उचित समाधान प्रस्तुत किया है।

तीनों ही नारियाँ स्वाभिमानी हैं। तीनों के वैरागी पति अपने घर आते हैं तब नारियाँ उनसे मिलने नहीं जाती हैं, वरन् वे उनसे मिलने आते हैं। इस प्रकार से उनका उपेक्षा भाव समाप्त हो जाता है। साथ ही समाज में उनका मान सम्मान पुनः स्थापित हो जाता है।

एक बार शुद्धोधन (ससुर) गौतम से मिलने का प्रस्ताव विरहिणी यशोधरा के समक्ष रखते हैं, तभी उसका नारीत्व जाग उठता है।

'किन्तु तात! उनका निदेश
बिना पाये मैं,
यह घर छोड़ कहाँ और कैसे जाऊँगी।[1]

और अन्त में बुद्ध अपने सन्यासीपन को भूल गये और यशोधरा का मान रखने के लिए स्वयं उसके भवन पहुंचे और कहा—

मानिनि, मान तजो लो, रही तुम्हारी बान
दामिनि, आया स्वयं द्वार यह तव-तात भवन।[2]

महाप्रभु चैतन्य भी विष्णुप्रिया से मिलने घर आते हैं। उन्होंने भी विष्णुप्रिया को पहचानकर एक बार उससे क्षमा माँगी। लक्ष्मण भी उर्मिला से मिलने आते हैं।

गुप्त जी के नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण के तीन चरण दिखाई देते हैं। पहले, वह नारी के प्रति सहानुभूति जगाते हैं, (साकेत की उर्मिला के माध्यम से विष्णुप्रिया की विष्णुप्रिया) तब

1. गुप्त जी; यशोधरा पृ. सं. 123.
2. गुप्त जी; यशोधरा पृ. सं. 143

नारी और नर में समानता के भाव जगाते हैं यशोधरा में। तीसरे चरण पर पहुंचकर नारी विद्रोह पूर्वक अपने अधिकार मांगने लगती है। (द्वापर की विधृता)

तीनों काव्य ग्रन्थों में केवल उपेक्षा भाव है, इस में (नारी और पुरुष) दोनों परस्पर प्रेमभाव रखते हैं।

समाज में कुछ ऐसे पुरुष भी हैं जो नारियों पर अत्याचार करते हैं, या उनके सुचरित्र पर शंका करते हैं। तब इसके विरोध में गुप्त जी ने नारी का क्रान्ति कारिणी और विद्रोहिणी रूप भी दिखाया है। गुप्तजी की नारी मध्ययुगीन नारी की भांति पुरुष के अत्याचार को चुपचाप सहती नहीं बल्कि उसका प्रतिकार करती है।

गुप्त जी ने द्वापर की विधृता के माध्यम से ऐसी नारियों का चित्र खींचा हैं। वह कृष्ण भक्त नारी थी। जब कृष्ण सखाओं को भोजन देने वह जा रही थी तब उसके ब्राह्मण पति ने टोक दिया और उसके चरित्र पर शक किया। तब वह पुरुष को ललकारती हुई अनेक प्रकार से प्रतिकार करती है:-

'मुट्ठी भर भी जो न दे सके,
दासी थी, मैं आहा।' [1]

'अधिकारों के दुरुपयोग का
कौन कहाँ अधिकारी,
कुछ भी स्वत्व नहीं रखती क्या,
अर्द्धांगिनी तुम्हारी।'

'अविश्वास हा! अविश्वास हो,
नारी के प्रति नर का
नर के तो सौ दोष क्षमा है,
स्वामी है वह घर का।'

गुप्त जी की दृष्टि में कोई भी नारी निन्दनीय नहीं है, यदि उसने अपनी त्रुटियों को समझ लिया और उसका पश्चाताप कर लिया है, तब वह क्षमा के पात्र हैं। ऐसी ही एक नारी है, साकेत में कैकेयी - जिसे मानस में एक कलंकित स्त्री के रूप में चित्रित किया है, परन्तु गुप्त जी ने कैकेयी से पश्चातोप करवाया और उसके कलंकित चरित्र को धो डाला है और उसे प्रशंसा का पात्र बना दिया है। चित्रकूट में राम के साथ ही सभा एक स्वर से कह उठती है:-

'सौ बार धन्य है, वह एक लाल की माई,
जिस जननी ने है जना भरत-सा भाई।' [9]

जहाँ गुप्त जी ने अपने काव्य ग्रन्थों में नारी के त्यागमय रूप को अंकित किया है वहीं अपने अपने समय की पथभ्रष्ट नारियों का चित्रण भी किया है। इसको पंचवटी की शूर्पनखा के रूप में देखा जा सकता है और वह (गुप्त जी) उसकी करनी का उचित दण्ड भी दिलवाते हैं।

गुप्त जी ने नारी के प्रति सहानुभूति प्रकट करके पुरुषों के भीतर यह प्रेरणा जागृत की, कि वह अपनी इच्छा से नारियों को उनका उचित अधिकार दे।

इसीलिए गुप्त जी के सभी काव्यों में नारी की करुणा ही बोलती है और वह (नारियां) इसी हथियार से पुरुषों की कठोरता को कम कर सकती है।

---

1. गुप्तजी; साकेत